

## ‘मन की बात’ (100 वाँ एपिसोड)

प्रसारण तिथि: 30.04.2023

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार | आज ‘मन की बात’ का सौवां एपिसोड है | मुझे आप सबकी हजारों चिट्ठियाँ मिली हैं, लाखों सन्देश मिले हैं और मैंने कोशिश की है कि ज्यादा से ज्यादा चिट्ठियों को पढ़ पाऊँ, देख पाऊँ, संदेशों को जरा समझने की कोशिश करूँ | आपके पत्र पढ़ते हुए कई बार मैं भावुक हुआ, भावनाओं से भर गया, भावनाओं में बह गया और खुद को फिर सम्भाल भी लिया | आपने मुझे ‘मन की बात’ के सौवें एपिसोड पर बधाई दी है लेकिन मैं सच्चे दिल से कहता हूँ, दरअसल बधाई के पात्र तो आप सभी ‘मन की बात’ के श्रोता हैं, हमारे देशवासी हैं | ‘मन की बात’, कोटि-कोटि भारतीयों के ‘मन की बात’ है, उनकी भावनाओं का प्रकटीकरण है |

साथियो, 3 अक्टूबर, 2014, विजय दशमी का वो पर्व था और हम सबने मिलकर विजय दशमी के दिन ‘मन की बात’ की यात्रा शुरू की थी | विजय दशमी यानी बुराई पर अच्छाई की जीत का पर्व | ‘मन की बात’ भी देशवासियों की अच्छाइयों का, सकारात्मकता का, एक अनोखा पर्व बन गया है | एक ऐसा पर्व जो हर महीने आता है, जिसका इंतजार हम सभी को होता है | हम इसमें positivity को celebrate करते हैं | हम इसमें people’s participation को भी celebrate करते हैं | कई बार यकीन नहीं होता कि ‘मन की बात’ को इतने महीने और इतने साल गुजर गए | हर एपिसोड अपने आप में खास रहा | हर बार, नए उदाहरणों की नवीनता, हर बार देशवासियों की नई सफलताओं का विस्तार | ‘मन की बात’ में पूरे देश के कोने-कोने से लोग जुड़े, हर आयु-वर्ग के लोग जुड़े | बेटी-बचाओ बेटी-पढ़ाओ की बात हो, स्वच्छ भारत आन्दोलन हो, खादी के प्रति प्रेम हो या प्रकृति की बात, आजादी का अमृत महोत्सव हो या फिर अमृत सरोवर की बात, ‘मन की बात’ जिस विषय से जुड़ा, वो, जन-आंदोलन बन गया, और आप लोगों ने बना दिया | जब मैंने, तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा

के साथ साझा 'मन की बात' की थी, तो इसकी चर्चा पूरे विश्व में हुई थी ।

साथियो, 'मन की बात' मेरे लिए तो दूसरों के गुणों की पूजा करने की तरह ही रहा है । मेरे एक मार्गदर्शक थे - श्री लक्ष्मणराव जी ईनामदार । हम उनको वकील साहब कहा करते थे । वो हमेशा कहते थे कि हमें दूसरों के गुणों की पूजा करनी चाहिए । सामने कोई भी हो, आपके साथ का हो, आपका विरोधी हो, हमें उसके अच्छे गुणों को जानने का, उनसे सीखने का, प्रयास करना चाहिए । उनकी इस बात ने मुझे हमेशा प्रेरणा दी है । 'मन की बात' दूसरों के गुणों से सीखने का बहुत बड़ा माध्यम बन गयी है ।

मेरे प्यारे देशवासियो, इस कार्यक्रम ने मुझे कभी भी आपसे दूर नहीं होने दिया । मुझे याद है, जब मैं गुजरात का मुख्यमंत्री था, तो वहां सामान्य जन से मिलना-जुलना स्वाभाविक रूप से हो ही जाता था । मुख्यमंत्री का कामकाज और कार्यकाल ऐसा ही होता है, मिलने जुलने के अवसर बहुत मिलते ही रहते हैं । लेकिन 2014 में दिल्ली आने के बाद मैंने पाया कि यहाँ का जीवन तो बहुत ही अलग है । काम का स्वरूप अलग, दायित्व अलग, स्थितियाँ-परिस्थितियों के बंधन, सुरक्षा का तामझाम, समय की सीमा । शुरुआती दिनों में, कुछ अलग महसूस करता था, खाली-खाली सा महसूस करता था । पचासों साल पहले मैंने अपना घर इसलिए नहीं छोड़ा था कि एक दिन अपने ही देश के लोगों से संपर्क ही मुश्किल हो जायेगा । जो देशवासी मेरा सब कुछ है, मैं उनसे ही कट करके जी नहीं सकता था । 'मन की बात' ने मुझे इस चुनौती का समाधान दिया, सामान्य मानवी से जुड़ने का रास्ता दिया । पदभार और प्रोटोकॉल, व्यवस्था तक ही सीमित रहा और जनभाव, कोटि-कोटि जनों के साथ, मेरे भाव, विश्व का अटूट अंग बन गया । हर महीने में देश के लोगों के हजारों संदेशों को पढता हूँ, हर महीने में देशवासियों के एक से एक अद्भुत स्वरूप के दर्शन करता हूँ । मैं देशवासियों के तप-त्याग की पराकाष्ठा को देखता हूँ, महसूस करता हूँ । मुझे लगता ही नहीं है, कि मैं, आपसे थोडा भी दूर हूँ । मेरे लिए 'मन की बात' ये एक कार्यक्रम नहीं है, मेरे लिए एक आस्था, पूजा, व्रत है । जैसे लोग,

ईश्वर की पूजा करने जाते हैं, तो, प्रसाद की थाल लाते हैं । मेरे लिए 'मन की बात' ईश्वर रूपी जनता जनार्दन के चरणों में प्रसाद की थाल की तरह है । 'मन की बात' मेरे मन की आध्यात्मिक यात्रा बन गया है ।

'मन की बात' स्व से समिष्टि की यात्रा है ।

'मन की बात' अहम् से वयम् की यात्रा है ।

यह तो मैं नहीं तू ही इसकी संस्कार साधना है ।

आप कल्पना करिए, मेरा कोई देशवासी 40-40 साल से निर्जन पहाड़ी और बंजर जमीन पर पेड़ लगा रहा है, कितने ही लोग 30-30 साल से जल-संरक्षण के लिए बावड़ियां और तालाब बना रहे हैं, उसकी साफ़-सफाई कर रहे हैं । कोई 25-30 साल से निर्धन बच्चों को पढ़ा रहा है, कोई गरीबों की इलाज में मदद कर रहा है । कितनी ही बार 'मन की बात' में इनका जिक्र करते हुए मैं भावुक हो गया हूँ । आकाशवाणी के साथियों को कितनी ही बार इसे फिर से रिकॉर्ड करना पड़ा है । आज, पिछला कितना ही कुछ, आँखों के सामने आए जा रहा है । देशवासियों के इन प्रयासों ने मुझे लगातार खुद को खपाने की प्रेरणा दी है ।

साथियो, 'मन की बात' में जिन लोगों का हम ज़िक्र करते हैं वे सब हमारे Heroes हैं जिन्होंने इस कार्यक्रम को जीवंत बनाया है । आज जब हम 100वें एपिसोड के पड़ाव पर पहुंचे हैं, तो मेरी ये भी इच्छा है कि हम एक बार फिर इन सारे Heroes के पास जाकर उनकी यात्रा के बारे में जानें । आज हम कुछ साथियों से बात भी करने की कोशिश करेंगे । मेरे साथ जुड़ रहे हैं हरियाणा के भाई सुनील जगलान जी । सुनील जगलान जी का मेरे मन पर इतना प्रभाव इसलिए पड़ा क्योंकि हरियाणा में Gender Ratio पर काफी चर्चा होती थी और मैंने भी 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' का अभियान हरियाणा से ही शुरू किया था । और इसी बीच जब सुनील जी के 'Selfie With Daughter' Campaign पर मेरी नजर पड़ी, तो मुझे बहुत अच्छा लगा । मैंने भी उनसे सीखा और इसे 'मन की बात' में शामिल किया । देखते ही देखते 'Selfie With Daughter' एक Global Campaign में बदल गया । और इसमें मुद्दा Selfie नहीं थी,

technology नहीं थी, इसमें Daughter को, बेटी को प्रमुखता दी गयी थी । जीवन में बेटी का स्थान कितना बड़ा होता है, इस अभियान से यह भी प्रकट हुआ । ऐसे ही अनेकों प्रयासों का परिणाम है कि आज हरियाणा में Gender Ratio में सुधार आया है । आइये आज सुनील जी से ही कुछ गप मार लेते हैं ।

प्रधानमंत्री जी- नमस्कार सुनील जी,

सुनील- नमस्कार सर, मेरी खुशी बहुत बढ़ गई है सर आपकी आवाज़ सुन कर ।

प्रधानमंत्री जी- सुनील जी 'Selfie with Daughter' हर किसी को याद है...अब जब इसकी फिर चर्चा हो रही है तो आपको कैसा लग रहा है ।

सुनील - प्रधानमंत्री जी, ये असल में आपने जो हमारे प्रदेश हरियाणा से पानीपत की चौथी लड़ाई बेटियों के चेहरे पर मुस्कुराहट लाने के लिए शुरू की थी जिसे आपके नेतृत्व में पूरे देश ने जितने की कोशिश की है तो वाकई ये मेरे लिए और हर बेटी के पिता और बेटियों को चाहने वालों के लिए बहुत बड़ी बात है ।

प्रधानमंत्री जी- सुनील जी अब आपकी बिटिया कैसी है, आज कल क्या कर रही है ?

सुनील- जी मेरी बेटियां नंदनी और याचिका है एक 7<sup>th</sup> Class में पढ़ रही है एक 4<sup>th</sup> Class में पढ़ रही है और आपकी बड़ी प्रशंसक है उन्होंने आपके लिए थैंक्यू प्राइम मिनिस्टर करके अपनी क्लासमेट्स जो हैं लैटर भी लिखवाए थे असल में ।

प्रधानमंत्री जी- वाह वाह ! अच्छा बिटिया को आप मेरा और मन की बात के श्रोताओं का खूब सारा आशीर्वाद दीजिये ।

सुनील- बहुत- बहुत शुक्रिया जी, आपकी वजह से देश की बेटियों के चेहरे पर लगातार मुस्कान बढ़ रही है ।

प्रधानमंत्री जी- बहुत- बहुत धन्यवाद सुनील जी ।

सुनील - जी शुक्रिया ।

साथियो, मुझे इस बात का बहुत संतोष है कि 'मन की बात' में हमने देश की नारी शक्ति की सैकड़ों प्रेरणादायी गाथाओं का जिक्र किया है । चाहे हमारी सेना हो या फिर खेल जगत हो, मैंने जब भी महिलाओं की उपलब्धियों पर बात की है, उसकी खूब प्रशंसा हुई है । जैसे हमने छत्तीसगढ़ के देउर गाँव की महिलाओं की चर्चा की थी । ये महिलाएं स्वयं सहायता समूहों के जरिए गाँव के चौराहों, सड़कों और मंदिरों के सफाई के लिए अभियान चलाती हैं । ऐसे ही, तमिलनाडु की वो आदिवासी महिलाएं, जिन्होंने हज़ारों Eco-Friendly Terracotta Cups (टेराकोटा कपस) निर्यात किए, उनसे भी देश ने खूब प्रेरणा ली । तमिलनाडु में ही 20 हजार महिलाओं ने साथ आकर वेल्लोर में नाग नदी को पुनर्जीवित किया था । ऐसे कितने ही अभियानों को हमारी नारी-शक्ति ने नेतृत्व दिया है और 'मन की बात' उनके प्रयासों को सामने लाने का मंच बना है ।

साथियो, अब हमारे साथ Phone line पर एक और सज्जन मौजूद हैं । इनका नाम है, मंजूर अहमद । 'मन की बात' में, जम्मू-कश्मीर की Pencil Slates (पेन्सिल स्लेट्स) के बारे में बताते हुए मंजूर अहमद जी का जिक्र हुआ था ।

प्रधानमंत्री जी- मंजूर जी, कैसे हैं आप ?

मंजूर जी- थैंक्यू सर...बड़े अच्छे से हैं सर ।

प्रधानमंत्री जी- मन की बात के इस 100 वें एपिसोड में आपसे बात करके मुझे बहुत अच्छा लग रहा है ।

मंजूर जी - थैंक्यू सर ।

प्रधानमंत्री जी- अच्छा ये पेंसिल- स्लेट्स वाला काम कैसा चल रहा है?

मंजूर जी- बहुत अच्छे से चल रहा है सर बहुत अच्छे से, जब से सर आपने हमारी बात, 'मन की बात' में कही सर तब से बहुत काम बढ़ गया सर और दूसरों को भी रोज़गार यहाँ बहुत बढ़ा है इस काम में ।

प्रधानमंत्री जी- कितने लोगों को अब रोज़गार मिलता होगा ?

मंजूर जी- अभी मेरे पास 200 प्लस है...

प्रधानमंत्री जी- अरे वाह! मुझे बहुत खुशी हुई ।

मंजूर जी - जी सर..जी सर...अभी एक दो महीने में इसको expand कर रहा हूँ और 200 लोगों को रोज़गार बढ़ जाएगा सर।

प्रधानमंत्री जी- वाह वाह! देखिये मंजूर जी...

मंजूर जी- जी सर...

प्रधानमंत्री जी- मुझे बराबर याद है और उस दिन आपने मुझे कहा था कि ये एक ऐसा काम है जिसकी न कोई पहचान है, न स्वयं की पहचान है, और आपको बड़ी पीड़ा भी थी और इस वजह से आपको बड़ी मुश्किलें होती थी वो भी आप कह रहे थे, लेकिन अब तो पहचान भी बन गई और 200 से ज़्यादा लोगों को रोज़गार दे रहे हैं।

मंजूर जी- जी सर... जी सर.

प्रधानमंत्री जी- और नए expansion करके और 200 लोगों को रोज़गार दे रहे हैं, ये तो बहुत खुशी की खबर दी आपने ।

मंजूर जी- Even सर, यहाँ पर जो farmer हैं सर उनका भी बहुत बड़ा इसमें फायदा मिला सर तब से | 2000 का tree बेचते थे अभी वही tree 5000 तक पहुँच गया सर | इतनी demand बढ़ गई है इसमें तब से..और इसमें अपनी पहचान भी बन गई है इसमें बहुत से order हैं अपने पास सर, अभी मैं आगे एक-दो महीनें में और expand करके और दो-ढाई, सौ दो-चार गांव में जितने भी लड़के-लड़कियां हैं इसमें adjust हो सकते हैं उनका भी रोज़ी-रोटी चल सकता है सर |

प्रधानमंत्री जी- देखिये मंजूर जी, Vocal for Local की ताकत कितनी जबरदस्त है आपने धरती पर उतार कर दिखा दिया है।

मंजूर जी- जी सर।

प्रधानमंत्री जी- मेरी तरफ से आपको और गांव के सभी किसानों को और आपके साथ काम कर रहे सभी साथियों को भी मेरी तरफ से बहुत-बहुत शुभकामनाएं, धन्यवाद भैया |

मंजूर जी- धन्यवाद सर |

साथियो, हमारे देश में ऐसे कितने ही प्रतिभाशाली लोग हैं, जो अपनी मेहनत के बलबूते ही सफलता के शिखर तक पहुंचे हैं | मुझे याद है, विशाखापट्टनम के वेंकट मुरली प्रसाद जी ने एक आत्मनिर्भर भारत Chart Share किया था | उन्होंने बताया था कि वो कैसे ज्यादा से ज्यादा भारतीय products ही इस्तेमाल करेंगे | जब बेतिया के प्रमोद जी ने LED बल्ब बनाने की छोटी यूनिट लगाई या गढ़मुक्तेश्वर के संतोष जी ने mats बनाने का काम किया, 'मन की बात' ही उनके उत्पादों को सबके सामने लाने का माध्यम बना | हमने Make in India के अनेक उदाहरणों से लेकर Space Start-ups तक की चर्चा 'मन की बात' में की है |

साथियो, आपको याद होगा, कुछ एपिसोड पहले मैंने मणिपुर की बहन विजयशांति देवी जी का भी जिक्र किया था । विजयशांति जी कमल के रेशों से कपड़े बनाती हैं । 'मन की बात' में उनके इस अनोखे eco-friendly idea की बात हुई तो उनका काम और popular हो गया । आज विजयशांति जी फ़ोन पर हमारे साथ हैं ।

प्रधानमंत्री जी :- नमस्ते विजयशांति जी ! How are you?

विजयशांति जी :- Sir, I am fine.

प्रधानमंत्री जी :- and how's your work going on ?

विजयशांति जी :- sir, still working along with my 30 women

प्रधानमंत्री जी :- in such a short period you have reached 30 persons team !

विजयशांति जी :- Yes sir, this year also more expand with 100 women in my area

प्रधानमंत्री जी :- so your target is 100 women

विजयशांति जी :- yaa ! 100 women

प्रधानमंत्री जी :- and now people are familiar with this lotus stem fiber

विजयशांति जी :- yes sir, everyone's know from 'Mann Ki Baat' Programme all over India.

प्रधानमंत्री जी :- so now it's very popular



**विजयशांति जी :- yes sir, from Prime Minister 'Mann ki Baat' programme everyone knows about lotus fibre**

**प्रधानमंत्री जी :- so now you got the market also ?**

**विजयशांति जी :- yes, I have got a market from USA also they want to buy in bulk, in lots quantities, but I want to give from this year to send the U.S also**

**प्रधानमंत्री जी :- So, now you are exporter ?**

**विजयशांति जी :- yes sir, from this year I export our product made in India Lotus fibre**

**प्रधानमंत्री जी :- so, when I say Vocal for Local and now Local for Global**

**विजयशांति जी :- yes sir, I want to reach my product all over the globe of all world**

**प्रधानमंत्री जी :- so congratulation and wish you best luck**

**विजयशांति जी :- Thank you sir**

**प्रधानमंत्री जी :- Thank you, Thank you Vijaya Shanti**

**विजयशांति जी :- Thank You sir**

साथियो, 'मन की बात' के एक और विशेषता रही है । 'मन की बात' के जरिए कितने ही जन-आन्दोलन ने जन्म भी लिया है और गति भी पकड़ी है । जैसे हमारे खिलौने, हमारी Toy Industry को फिर से स्थापित करने का mission 'मन की बात' से ही तो शुरू हुआ था । भारतीय नस्ल के श्वान हमारे देशी डॉग्स उसको लेकर

जागरूकता बढ़ाने की शुरुआत भी तो 'मन की बात' से ही की थी । हमने एक और मुहिम शुरू की थी कि हम ग़रीब छोटे दुकानदारों से मोलभाव नहीं करेंगे, झगड़ा नहीं करेंगे । जब 'हर घर तिरंगा' मुहिम शुरू हुई, तब भी 'मन की बात' ने देशवासियों को इस संकल्प से जोड़ने में खूब भूमिका निभाई । ऐसे हर उदाहरण, समाज में बदलाव का कारण बने हैं । समाज को प्रेरित करने का ऐसे ही बीड़ा प्रदीप सांगवान जी ने भी उठा रखा है । 'मन की बात' में हमने प्रदीप सांगवान जी के 'हीलिंग हिमालयाज़' अभियान की चर्चा की थी । वो फ़ोनलाइन पर हमारे साथ हैं ।

मोदी जी - प्रदीप जी नमस्कार !

प्रदीप जी - सर जय हिन्द ।

मोदी जी - जय हिन्द, जय हिन्द, भईया ! कैसे हैं आप ?

प्रदीप जी - सर बहुत बढ़िया । आपकी आवाज सुनकर और भी अच्छा ।

मोदी जी - आपने हिमालय को Heal करने की सोची ।

प्रदीप जी - हाँ जी सर ।

मोदी जी - अभियान भी चलाया । आज कल आपका Campaign कैसा चल रहा है ?

प्रदीप जी - सर बहुत अच्छा चल रहा है । 2020 से ऐसा मानिये कि जितना काम हम पांच साल में करते थे अब वो एक साल में हो जाता है ।

मोदी जी - अरे वाह !

प्रदीप जी - हाँ जी, हाँ जी, सर । शुरुआत बहुत nervous हुई थी बहुत डर था इस बात को लेके कि जिंदगी भर ये कर पाएँगे कि नहीं कर पाएँगे पर थोड़ा support मिला और 2020 तक हम बहुत struggle भी कर रहे थे honestly । लोग बहुत कम जुड़ रहे थे बहुत सारे ऐसे लोग थे जो कि support नहीं कर पा रहे थे । हमारी मुहिम को इतना तवज्जो भी नहीं दे रहे थे । But 2020 के बाद जब 'मन की बात' में जिक्र हुआ उसके बाद बहुत सारी चीज़े बदल गई । मतलब पहले हम, साल में 6-7 cleaning drive कर पाते थे, 10 cleaning drive कर पाते थे । आज की date में हम daily bases पे पाँच टन कचरा इकठ्ठा करते हैं । अलग-अलग location से ।

मोदी जी - अरे वाह !

प्रदीप जी - 'मन की बात' में जिक्र होने के बाद आप सर believe करें मेरी बात को कि मैं almost give-up करने की stage पर था एक टाइम पे और उसके बाद फिर बहुत सारा बदलाव आया मेरे जीवन में और चीज़ें इतनी speed-up हो गई कि जो चीज़ें हमने सोची नहीं थी । So I'm really thankful कि पता नहीं कैसे हमारे जैसे लोगों को आप ढूँढ लेते हैं । कौन इतनी दूर-दराज area में काम करता है हिमालय के क्षेत्र में जाके बैठ के हम काम कर रहे हैं । इस altitude पे हम काम कर रहे हैं । वहाँ पे आपने ढूँढा हमें । हमारे काम को दुनिया के सामने ले के आये । तो मेरे लिए बहुत emotional moment था तब भी और आज भी कि मैं जो हमारे देश के जो प्रथम सेवक हैं उनसे मैं बातचीत कर पा रहा हूँ । मेरे लिए इससे बड़े सौभाग्य की बात नहीं हो सकती ।

मोदी जी - प्रदीप जी ! आप तो हिमालय की चोटियों पर सच्चे अर्थ में साधना कर रहे हैं और मुझे पक्का विश्वास है अब आपका नाम

सुनते ही लोगों को याद आ जाता है कि आप कैसे पहाड़ों की स्वच्छता अभियान में जुड़े हैं ।

प्रदीप जी - हाँ जी सर ।

मोदी जी - और जैसा आपने बताया कि अब तो बहुत बड़ी team बनती जा रही है और आप इतनी बड़ी मात्रा में daily काम कर रहे हैं।

प्रदीप जी - हाँ जी सर ।

मोदी जी - और मुझे पूरा विश्वास है कि आपके इन प्रयासों से, उसकी चर्चा से, अब तो कितने ही पर्वतारोही स्वच्छता से जुड़े photo post करने लगे हैं ।

प्रदीप जी - हाँ जी सर ! बहुत ।

मोदी जी - ये अच्छी बात है, आप जैसे साथियों के प्रयास के कारण waste is also a wealth ये लोगों के दिमाग में अब स्थिर हो रहा है, और पर्यावरण की भी रक्षा अब हो रही है और हिमालय का जो हमारा गर्व है उसको संभालना, संवारना और सामान्य मानवी भी जुड़ रहा है । प्रदीप जी बहुत अच्छा लगा मुझे । बहुत-बहुत धन्यवाद भईया ।

प्रदीप जी - Thank you Sir Thank you so much जय हिन्द ।

साथियो, आज देश में Tourism बहुत तेजी से Grow कर रहा है । हमारे ये प्राकृतिक संसाधन हों, नदियाँ, पहाड़, तालाब या फिर हमारे तीर्थ स्थल हों, उन्हें साफ़ रखना बहुत ज़रूरी है । ये Tourism Industry की बहुत मदद करेगा । पर्यटन में स्वच्छता के साथ-साथ हमने Incredible India movement की भी कई बार चर्चा की है । इस movement से लोगों को पहली बार ऐसे कितनी ही

जगहों के बारे में पता चला, जो उनके आस-पास ही थे । मैं हमेशा ही कहता हूँ कि हमें विदेशों में Tourism पर जाने से पहले हमारे देश के कम से कम 15 Tourist destination पर जरूर जाना चाहिए और यह Destination जिस राज्य में आप रहते हैं, वहां के नहीं होने चाहिए, आपके राज्य से बाहर किसी अन्य राज्य के होने चाहिए । ऐसे ही हमने स्वच्छ सियाचिन, single use plastic और e-waste जैसे गंभीर विषयों पर भी लगातार बात की है । आज पूरी दुनिया पर्यावरण के जिस issue को लेकर इतना परेशान है, उसके समाधान में 'मन की बात' का ये प्रयास बहुत अहम है ।

साथियो, 'मन की बात' को लेकर मुझे इस बार एक और खास संदेश UNESCO की DG औद्रे ऑजुले (Audrey Azoulay) का आया है । उन्होंने सभी देशवासियों को सौ एपिसोड्स (100<sup>th</sup> Episodes) की इस शानदार journey के लिये शुभकामनायें दी हैं । साथ ही, उन्होंने कुछ सवाल भी पूछे हैं । आइये, पहले UNESCO की DG के मन की बात सुनते हैं ।

**#Audio (UNESCO DG)#**

**DG UNESCO: Namaste Excellency, Dear Prime Minister on behalf of UNESCO I thank you for this opportunity to be part of the 100<sup>th</sup> episode of the 'Mann Ki Baat' Radio broadcast. UNESCO and India have a long common history. We have very strong partnerships together in all areas of our mandate - education, science, culture and information and I would like to take this opportunity today to talk about the importance of education. UNESCO is working with its member states to ensure that everyone in the world has access to quality education by 2030. With the largest population in the world, could you please explain Indian way to achieving this**

objective. UNESCO also works to support culture and protect heritage and India is chairing the G-20 this year. World leaders would be coming to Delhi for this event. Excellency, how does India want to put culture and education at the top of the international agenda? I once again thank you for this opportunity and convey my very best wishes through you to the people of India....see you soon. Thank you very much.

**PM Modi: Thank you, Excellency. I am happy to interact with you in the 100<sup>th</sup> 'Mann ki Baat' programme. I am also happy that you have raised the important issues of education and culture.**

साथियो, UNESCO की DG ने Education और Cultural Preservation, यानी शिक्षा और संस्कृति संरक्षण को लेकर भारत के प्रयासों के बारे में जानना चाहा है। ये दोनों ही विषय 'मन की बात' के पसंदीदा विषय रहे हैं।

बात शिक्षा की हो या संस्कृति की, उसके संरक्षण की बात हो या संवर्धन की, भारत की यह प्राचीन परंपरा रही है। इस दिशा में आज देश जो काम कर रहा है, वो वाकई बहुत सराहनीय है। National Education Policy हो या क्षेत्रीय भाषा में पढ़ाई का विकल्प हो, Education में Technology Integration हो, आपको ऐसे अनेक प्रयास देखने को मिलेंगे। वर्षों पहले गुजरात में बेहतर शिक्षा देने और Dropout Rates को कम करने के लिए 'गुणोत्सव और शाला प्रवेशोत्सव' जैसे कार्यक्रम जनभागीदारी की एक अद्भुत मिसाल बन गए थे। 'मन की बात' में हमने ऐसे कितने ही लोगों के प्रयासों को Highlight किया है, जो निःस्वार्थ भाव से शिक्षा के लिए काम कर रहे हैं। आपको याद होगा, एक बार हमने ओडिशा में ठेले पर चाय बेचने वाले स्वर्गीय डी. प्रकाश राव जी के बारे में चर्चा की

थी, जो गरीब बच्चों को पढ़ाने के मिशन में लगे हुए थे । झारखण्ड के गांवों में Digital Library चलाने वाले संजय कश्यप जी हों, Covid के दौरान E-learning के जरिये कई बच्चों की मदद करने वाली हेमलता N.K. जी हों, ऐसे अनेक शिक्षकों के उदाहरण हमने 'मन की बात' में लिये हैं । हमने Cultural Preservation के प्रयासों को भी 'मन की बात' में लगातार जगह दी है ।

लक्षदीप का Kummel Brothers Challengers Club हो, या कर्नाटका के 'क्वैमश्री' जी 'कला चेतना' जैसे मंच हो, देश के कोने-कोने से लोगों ने मुझे चिट्ठी लिखकर ऐसे उदाहरण भेजे हैं । हमने उन तीन Competitions को लेकर भी बात की थी, जो देशभक्ति पर 'गीत' 'लोरी' और 'रंगोली' से जुड़े थे । आपको ध्यान होगा, एक बार हमने देश भर के Story Tellers से Story Telling के माध्यम से शिक्षा की भारतीय विधाओं पर चर्चा की थी । मेरा अटूट विश्वास है कि सामूहिक प्रयास से बड़े से बड़ा बदलाव लाया जा सकता है । इस साल हम जहाँ आजादी के अमृतकाल में आगे बढ़ रहे हैं, वहीं G-20 की अध्यक्षता भी कर रहे हैं । यह भी एक वजह है कि Education के साथ-साथ Diverse Global Cultures को समृद्ध करने के लिये हमारा संकल्प और मजबूत हुआ है ।

मेरे प्यारे देशवासियो, हमारे उपनिषदों का एक मंत्र सदियों से हमारे मानस को प्रेरणा देता आया है ।

चरैवेति चरैवेति चरैवेति ।

चलते रहो-चलते रहो-चलते रहो ।

आज हम इसी चरैवेति चरैवेति की भावना के साथ 'मन की बात' का 100वाँ एपिसोड पूरा कर रहे हैं । भारत के सामाजिक ताने-बाने को मजबूती देने में 'मन की बात', किसी भी माला के धागे की

तरह है, जो हर मनके को जोड़े रखता है । हर एपिसोड में देशवासियों के सेवा और सामर्थ्य ने दूसरों को प्रेरणा दी है । इस कार्यक्रम में हर देशवासी दूसरे देशवासी की प्रेरणा बनता है । एक तरह से 'मन की बात' का हर एपिसोड अगले एपिसोड के लिए जमीन तैयार करता है । 'मन की बात' हमेशा सद्भावना, सेवा-भावना और कर्तव्य-भावना से ही आगे बढ़ा है । आज़ादी के अमृतकाल में यही Positivity देश को आगे ले जाएगी, नई ऊंचाई पर ले जाएगी और मुझे खुशी है कि 'मन की बात' से जो शुरुआत हुई, वो आज देश की नई परंपरा भी बन रही है । एक ऐसी परंपरा जिसमें हमें सबका प्रयास की भावना के दर्शन होते हैं ।

साथियो, मैं आज आकाशवाणी के साथियों को भी धन्यवाद दूंगा जो बहुत धैर्य के साथ इस पूरे कार्यक्रम को रिकॉर्ड करते हैं । वो translators, जो बहुत ही कम समय में, बहुत तेज़ी के साथ 'मन की बात' का विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद करते हैं, मैं उनका भी आभारी हूँ । मैं दूरदर्शन के और MyGov के साथियों को भी धन्यवाद देता हूँ । देशभर के TV Channels, Electronic media के लोग, जो 'मन की बात' को बिना commercial break के दिखाते हैं, उन सभी का मैं आभार व्यक्त करता हूँ और आखिरी में, मैं उनका भी आभार व्यक्त करूँगा, जो 'मन की बात' की कमान संभाले हुए हैं -भारत के लोग, भारत में आस्था रखने वाले लोग । ये सब कुछ आपकी प्रेरणा और ताकत से ही संभव हो पाया है ।

साथियो, वैसे तो मेरे मन में आज इतना कुछ कहने को है कि समय और शब्द दोनों कम पड़ रहे हैं । लेकिन मुझे विश्वास है कि आप सब मेरे भावों को समझेंगे, मेरी भावनाओं को समझेंगे । आपके परिवार के ही एक सदस्य के रूप में 'मन की बात' के सहारे आपके बीच में रहा हूँ, आपके बीच में रहूँगा । अगले महीने हम एक बार फिर मिलेंगे । फिर से नए विषयों और नई जानकारियों के साथ



देशवासियों की सफलताओं को celebrate करेंगे तब तक के लिए मुझे विदा दीजिये और अपना और अपनों का खूब ख्याल रखिए । बहुत-बहुत धन्यवाद । नमस्कार ।

\*\*\*\*\*